International Journal of Applied Research 2019; 5(3): 304-307

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2019; 5(3): 304-307
www.allresearchjournal.com
Received: 19-01-2019
Accepted: 21-02-2019

सीता कुमारी
शोधार्थी, विश्वविद्यालय हिन्दी–विभाग, ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
सीता कुमारी
शोधार्थी, विश्वविद्यालय हिन्दी–विभाग, ल.ना. मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

हल्दीघाटी एवं वीरवर कुँअर सिंह महाकाव्य राष्ट्रीय जागरण में योगदान

सीता कुमारी

सारांश
अंग्रेजी शासनकाल में जब श्री श्यामनारायण पाण्डेय ने 'हल्दीघाटी' महाकाव्य की रचना की तो पुस्तक अंग्रेजी शासन की आँख में खटकने लगी और अंग्रेजी शासन ने पुस्तक पर रोक लगाई। परतंत्र भारत में राष्ट्रीय जागरण की दृष्टि से 'हल्दीघाटी' महत्त्वपूर्ण थी। पाठकों एवं श्रोताओं के हृदय में मातृभूमि को स्वतंत्र कराने की भावनाएँ भड़कने लगती थी। इस प्रकार 'हल्दीघाटी' के रचना एवं प्रकाशन का समय भारतीय परिप्रेक्ष्य में सर्वथा अनुकूल था। बीसवीं सदी के अंत में प्रकाशित 'वीरवर कुँअर सिंह' यद्यपि प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के महानायक की वीरगाथा है, तथापि इसे अंग्रेजों के विरुद्ध संग्राम काल में किसी प्रकार की चेतना जगाने का श्रेय नहीं प्राप्त है, परंतु वर्त्तमान काल में लोगों को स्वतंत्रता संग्राम में भूमिका निभाने वाले नायकों के योगदान, साहस, आदि को बताने में तो योगदान है ही। गम्भीर परिस्थितियों में जहाँ लोग समर्पण कर देते है, वहीं कुँअर सिंह की वीरगाथा अत्यल्प साधनों के साथ गंभीर से गंभीर परिस्थितियों में भी अदम्य साहस के साथ शत्रु से डट कर मुकाबला करते हुए रणनीतिक सूझ–बूझ का प्रयोग कर दुश्मनों को धूल चटाने की है। दोनों ही महाकाव्य राष्ट्रीय चेतना को जगाते है।

प्रस्तावनाः
वीरवर कुँअर सिंह और हल्दीघाटी दोनों महाकाव्यों के नायक क्षत्रिय हैं। दोनों नायकों में राष्ट्र सेवा और देश सेवा की भावना कूट–कूट कर भरी हुई है, परन्तु दोनों की राष्ट्रीय भावना अलग–अलग है। हल्दीघाटी के नायक महाराणा प्रताप को अपनी मेवाड़ की रक्षा के लिए मुगल शासक अकबर से युद्ध करना पड़ा। महाराणा प्रताप अपने मेवाड़ को ही अपना राष्ट्र समझते थे और उसकी रक्षा करना अपना राष्ट्रीय धर्म। मेवाड़ की जनता भी अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए मर मिटने को तैयार रहती थी। परन्तु ठीक इसके विपरीत वीर कुँअर सिंह को अपने देश की रक्षा के लिए अंग्रेजों से युद्ध करना पड़ा। वीर कुँअर सिंह केवल अपने प्रान्त को ही नही, बल्कि सम्पूर्ण देश से अंग्रेजों को भगा देना चाहते थे और सम्पूर्ण भारत की आजादी के लिए लड़ाई लड़े। वीर कुँअर सिंह की राष्ट्रीयता का क्षेत्र विस्तृत है।

सम्पूर्ण भारत पहले छोटे–छोटे राज्य रजवाड़ों में बँटा हुआ था। उस छोटे से राज्य का राजा अपने राज्य को ही सुरक्षा की दृष्टि से देखता था। वह छोटा सा राज्य या मातृभूमि ही उसकी देशभक्ति और राष्ट्रभक्ति की सीमा होती थी। परन्तु धीरे–धीरे इन छोटे–छोटे राज्यों पर अंग्रेजों का आधिपत्य होता चला गया। तब सम्पूर्ण भारतीय अपने राष्ट्र और अपनी मातृभूमि की आजादी की लड़ाई लड़े। इसमें अंग्रेजों को मार भगाने का काम काफी हद तक वीर कुँअर सिंह ने किया। परन्तु छोटे राज्यों और अपनी मातृभूमि की आजादी के लिए महाराणा प्रताप लड़े जिसे निम्नांकित पंक्तियों में देखा जा सकता है –

''सूरमा ! भला तू कब अवसर चूकनेवाला था ? पहले ही से हल्दीघाटी के समीप एक मनोहर उपत्यका में बाईस हजार सिपाहियों को लेकर शत्रु की बाट देख रहा था और अरावली की उन्नत चोटी पर गर्वपूर्ण केसरिया झण्डा फहरा रहा था। तेरी सेना में हिन्दू–मुसलमान दोनों सम्मिलित थे, समर–यश में दोनों अपने प्राणों की आहुतियाँदेकर जननी जन्मभूमि की रक्षा करना चाहते थे। इसी से कहा जाता है कि हल्दीघाटी का युद्ध साम्प्रदायिक युद्ध नहीं था; बल्कि अपने–अपने सिद्धान्तों की लड़ाई थी।'' [1]

जिस प्रकार शिवाजी ने अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए रण कौशल अपनाया और छपामार युद्ध करते हुए अपने प्रान्त की रक्षा की ठीक उसी प्रकार अपने सम्पूर्ण राष्ट्र की रक्षा के लिए वीर कुँअर सिंह ने अंग्रेजों से युद्ध किया। उनकी वीरता इन पंक्तियों में देखी जा सकती है–''सन्तावन की क्रांति में अपनी युद्ध–पद्धति और रण–कौशल में उनकी (अर्थात् कुँअर सिंह की) बराबरी का कोई नहीं था।

छत्रपति शिवाजी के बाद वृक युद्ध के महत्त्व को सर्वप्रथम उन्होंने ही सिद्ध किया। इस युद्ध पद्धति के वह बहुत बड़े वीर थे।'' [2]

मेवाड़ के राजा महाराणा प्रताप से हल्दीघाटी के मैदान में अकबर की तरफ से मानसिंह युद्ध कर रहा था। इसके परिणाम स्वरूप महाराणा प्रताप की क्रोधाग्नि चरम सीमा पर थी। रणमत्त हाथी पर सवार मानसिंह पर दृष्टि पड़ने के पश्चात् महाराणा प्रताप के आवेग का चित्रण निम्नांकित पंक्तियों में इस प्रकार हुआ है–

''प्रतापी प्रताप ! अचानक तेरी दृष्टि उस रणमत्त हाथी पर पड़ी जिस पर बैठकर वीर सैनिकों से घिरा हुआ मानसिंह अपनी सेना का संचालन कर रहा था। तेरे शरीर का रक्त उबल उठा और क्रोध की ज्वाला से देह जल उठी।'' [3]

कुँअर सिंह की लड़ाई अंग्रेजों से वृद्धावस्था में हुई। यदि यह लड़ाई उनकी जवानी में हुई होती तो अंग्रेजों की खैर नहीं थी। इस बात को अंग्रेज इतिहासकार ने स्वयं स्वीकार कर लिया है। द्रष्टव्य है निम्नांकित पंक्तियाँ–

''इतिहासकार होम्स भी कुछ ऐसे ही विचारों को व्यक्त कर गया है–हम लोग (फिरंगी) बहुत सौभाग्यशाली थे कि क्रांति के समय कुँअर सिंह की आयु 40 वर्ष नहीं थी। वह बूढ़ा राजपूत ब्रिटिश सत्ता के खिलाफ आन से लड़ा और शान से मरा।'' [4]

अपनी मातृभूमि की रक्षा करने में असमर्थ होने के साथ ही महाराणा प्रताप को अपना साम्राज्य छोड़ने की स्थिति आ गई थी। परन्तु ठीक समय पर भामा साह का आगमन होता है। और उनके द्वारा दी गई सम्पत्ति से सेना खड़ा कर अपने राष्ट्र की रक्षा करने का बल प्राप्त हुआ। द्रष्टव्य है ये पंक्तियाँ–

''राष्ट्र–निर्माता ! माँ की आँसुओं ने तुझे विदा दी, तू अपनी मातृभूमि छोड़कर चलने के लिए प्रस्तुत हो गया, तब तक तेरी दृष्टि भामा साह पर पड़ी। उसको तूने भगवान एक लिंग के आशीर्वाद के समान देखा। वह वृद्ध तपस्वी लकड़ी के सहारे आकर तेरे चरणों से लिपट गया और आगे अतुल सम्पत्ति रखकर बोला–महाराणा प्राणों पर अधिक ममता न रहने पर भी तुझे देश के लिए जीना पड़ेगा तुझे मेवाड़ नहीं छोड़ सकता, तेरे रोम, रोम से वह अपने सुखमय भविष्य की आशा रखता है। जब तक तू इसका उद्धार नहीं कर लेगा ऋण से मुक्त नहीं होगा। प्रताप तू मेरी इस सम्पत्ति से वेतन भोगी सैनिक एकत्र करके ऐसा हड़कम्प मचा दे कि सारा विश्व हिल उठे और मेवाड़ के कण–कण में तेरे प्रताप की ज्वाला जल उठे जिससे झुण्ड के झुण्ड शत्रु मेवाड़ छोड़कर भेड़ों की तरह भाग निकले।'' [5]

बाबू कुँअर सिंह को भी लड़ाई में साथ देने के लिए प्रत्येक घर से नौजवानों की सेना में भर्ती हुई और लोगों के सहयोग से बाबू कुँअर सिंह की मजबूत सेना खड़ी हो गई। सभी लोग अंग्रेजों के अत्याचार से मुक्ति चाहते थे इस सम्बन्ध में निम्नांकित पंक्तियाँ उद्धृत की जा सकती है–

''घर–घर से एक–एक नौजवान बाबू साहब की सेवा में भर्ती हुआ। इन नौजवानों ने बिना वेतन की लड़ाइयाँ लड़ी। गाँव–गाँव से लोगों ने खाने के लिए रसद दी। नदी पार करने के लिए नावों का बन्दोबस्त किया। जहाँ–जहाँ बाबू साहब गये, लोगों ने हृदय से स्वागत किया और रुपये पैसे से सहायता की जन–जन की इच्छा थी कि हम अंग्रेजी शासन से मुक्ति पायें। इसके लिए उन्होंने त्याग और बलिदान भी किये।'' [6]

प्रत्येक देशभक्त को अपने देश और अपनी मातृभूमि से प्रेम होता है। यदि मातृभूमि पर किसी प्रकार का संकट आता है, तो उसकी रक्षा में अपनी जान न्योछावर कर देना भी कम पड़ सकता है। मेवाड़ की रक्षा के स्वर इन पंक्तियों में द्रष्टव्य है–

'हम माता के गुण गायेंगे,
बलि जन्मभूमि पर जायेंगे।
अपना झण्डा फहरायेंगे,
हम हाहाकार मचायेंगे।।' [7]

इसी प्रकार अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए वीरवर कुँअर सिंह महाकाव्य के इन छन्दों में देखा जा सकता है कि किस प्रकार भारत की धरती पर वीरों का सत्कार किया जा रहा है–

''नव पुष्प की अंजलि भरो, प्रिय मातृ चरणों में धरों,
भू–लोक–मन्दिर में, करों उस देश को शत वन्दना।
नमन करो, इस वीर भूमि को नमन करो हो,
पथिक भोजपुर–जनपद के गौरव–उदगाता !
नमन करों चिर–पावन भारत वसुन्धरा को,
जो शाश्वत मानव संस्कृतियों की है माता !'' [8]

अपनी स्वतंत्रता और आजादी की लड़ाई के लिए महाराणा प्रताप ने अपने वीर सैनिकों को अपनी मातृभूमि की रक्षार्थ समर्पण की शिक्षा दी है। इसे निम्नांकित छन्दों के स्वर में अवलोकित किया जा सकता है–

स्वतंत्रता के लिये मरों,
राणा ने पाठ पढ़ाया था।
इसी वेदिका पर वीरों ने;
अपना शीश चढ़ाया था।।
तुम भी तो उनके वंशज हो,
काम करो, कुछ नाम करो।
स्वतंत्रता की बलिवेदी है,
झुककर इसे प्रणाम करो।। [9]

राष्ट्ररक्षा या मातृभूमि की रक्षा का कर्त्तव्य केवल जाति विशेष (क्षत्रीय) को ही नहीं है, बल्कि यह कार्य तो उसके शौर्य और पराक्रम में है भले ही वह किसी भी जाति या धर्म का क्यों न हो, राष्ट्र रक्षा तो वीरता और बलिदान में है। उद्धृत की जा सकती हैं ये पंक्तियाँ–

''राजपूत क्या जाति, वर्ग कोई विशेष है ?
गुणवत्ता या उद्‌भुत कोई शौर्य–कर्म है ?
उष्ण रक्त की प्रकृति, उछलती तरूणाई ही
बलिदानी अंगारों का जीवन्त धर्म है।'' [10]

आजादी जन्म सिद्ध अधिकार है। किसी भी प्राणी को परतंत्रता स्वीकार नहीं है। सभी स्वतंत्र जीवन व्यतीत करने की अभिलाषा रखते है। इसे हल्दी घाटी के निम्नांकित पंक्तियों में देखा जा सकता है–

कुछ कर सकता अरि–तंत्र नहीं
लग सकता अकबर–मंत्र नहीं।
परतंत्र नहीं परतंत्र नहीं,
मैं रह सकता परतंत्र नहीं।। [11]

जातिवाद के कारण मातृभूमि पर संकट आ जाता है। इस संकट का निवारण केवल क्षत्रिय ही नहीं, बल्कि वीर पुरुषों के हाथों में होता है। चाहे वह किसी भी जाति और धर्म का क्यों न हो। वीरवर कुँअर सिंह की निम्नांकित पंक्तियों में इसे देखा जा सकता है–

फेंक दिया है हमने भुजबल को, पौरुष को;
जातिवाद के सड़े–गले कूड़े कचरे पर !
अहह ! खेद है, सिंहों को भी लाद दिया है,
राजनीति के छल–प्रपंच, गर्हित पचड़े पर। [12]

दूसरी तरफ हल्दीघाटी के महानायक महाराणा प्रताप ने अपनी जातिगत परम्परा और जातीय शान का परिचय दिय है। इसे निम्नांकित अवतरण की पंक्तियों में देखा जा सकता है–

'राजपूत अपमान न सहते,
परम्परा की बान यही।
हटो, कहा राणा ने पर
उसकी छाती उतान रही।। [13]

देश की गुलामी के बाद देशवासियों पर काफी अत्याचार अंग्रेजों द्वारा किया जा रहा था। उनके सारे अधिकार छीने जा रहे थे। ऐसी परिस्थिति में अपने राष्ट्र की रक्षा के लिए भले ही अपना सिर कटाना पड़े, परन्तु सिर झुकाना नहीं पड़े, हमें स्वीकार लेना चाहिए। द्रष्टव्य है ये पंक्तियाँ –

हठधर्मी लहरें टकरायीं हूण–शकों की;
कहो, वज्र सा वह कठोर चट्टान कहाँ है ?
मान न जाये चाहे प्राण भले ही जाये;
बच्चे–बच्चे के मुख पर वह गान कहाँ है ?
डंके की चोट पर तिरती तान कहाँ वह ?
सिर न झुकाना, भले न सिर क्यों पड़े गवाना !
राजभवन से लाख बार अच्छा है जंगल,
आजादी के लिए घास की रोटी खाना ! [14]

हल्दीघाटी के मैदान में महाराणा प्रताप से शक्ति सिंह युद्ध कर रहा था। इस युद्ध में दोनों सम्बन्धी आपस में लड़ रहे थे जिसका वर्णन श्याम नारायण पाण्डेय ने इस प्रकार किया है–

''दोनों का यह हाल देख
वन–देवी थी उर फाड़ रही।
भाई–भाई के विरोध से
काँप उठी मेवाड़–मही।।'' [15]

दिनों–दिन भारत में यदि अंग्रेजों का साम्राज्य विस्तार ठीक इसी प्रकार होता रहा तो भारतीय संस्कृति समाप्त हो जाएगी और गुलाम भारतीयों को केवल अंग्रेजों की सेवा करना पड़ेगा। आरसी प्रसाद सिंह की इन पंक्तियों में देखा जा सकता है–

''हाय अधोगति, अगर देश की यही रही, तो
भारतीय संस्कृति का शेष न नाम रहेगा।
अंग्रेजों के दास बनेंगे भारतवासी,
एक मात्र सेवा ही जिसका काम रहेगा।'' [16]

दोनों भाइयों, महाराणा प्रताप और शक्ति सिंह आपस में लड़े। इसके परिणामस्वरूप दोनों भाइयों का आपस में सम्बन्ध–विच्छेद हो गया। श्याम नारायण पाण्डेय ने लिखा है–

''बोल उठा राणा प्रताप–
मेवाड़ देश को छोड़ो तुम
शक्तिसिंह, तुम हटो हटो
मुझसे अब नाता तोड़ो तुम।'' [17]

देशभक्त अपनी मातृभूमि और अपने राष्ट्र रक्षा के लिए अपने साहस में कमी नहीं आने दे, इसके लिए वीरतापूर्ण गीता का स्वर गाता रहा है। साथ ही अपने राष्ट्र की प्रकृति और उसके सौन्दर्य को भी चित्रित किया है। वीरवर कुँअर सिंह महाकाव्य की ये पंक्तियाँ देखी जा सकती है–

''देश हमारा, सबसे न्यारा, भारत प्यारा प्यारा है।
जिसके आँगन में चिर पावन बहती गंगा धारा है।।
जग का मुकुट हिमालय पहरी,
महिमा की हिम–छाया गहरी,
जो सारे भूतल को देती अनुपम शान्ति सहारा है।
देश हमारा सबसे न्यारा भारत प्यारा–प्यारा है।।
जिसका गौरव–गान सुनाते,
प्राणों के पंछी अकुलाते।
मंदिर मंदिर में गीतों का सूरज–चाँद उतारा है।
देश हमारा सबसे न्यारा भारत प्यारा प्यारा है।।
आओ, हम उसकी जय बोले।
निर्भय हो वसुधा में डोले।
अपने ही हाथों से विधि ने जिसका रूप सँवारा है।
देश हमारा, सबसे न्यारा, भारत प्यारा–प्यारा है।। [18]

मेवाड़ की रक्षा की जिम्मेवारी महाराणा प्रताप के ऊपर है, परन्तु अपने सगे संबंधी ही अपना साथ छोड़कर विरोधियों की तरफ से युद्ध करते हैं। उद्धृत है ये पंक्तियाँ –

अकबर से मिल जाने पर हाँ,
राजपूतों की शान कहाँ ?
जन्म भूमि पर रह जायेगा
हाँ, अब नाम निशान कहाँ ? [19]

दूसरी तरफ अंग्रेजों के पादरी भारतीयों का धर्म परिवर्तन कराकर ईसाई बनाते जा रहे हैं। द्रष्टव्य हैं ये पंक्तियाँ–

''धन अपार ले चतुर पादरी कपट जाल फैलाते हैं।
फँसकर जिसमें भारतीय ईसाई होते जाते हैं।'' [20]

मेवाड़वासियों की पीड़ा से जब महाराणा प्रताप परिचित होते थे तब सदैव उनकी तलवार युद्ध करने की तैयारी में हो जाती थी। जिसका वर्णन इस प्रकार हुआ है–

''जब प्रताप सुनता था ऐसी
सदाचार की करुण–पुकार।
रण करने के लिए म्यान से
सदा निकल पड़ती तलवार।।'' [21]

भारतवासियों का धर्म परिवर्त्तन कराकर भारतीय संस्कृति को धीरे–धीरे समाप्त कर रहे थे। अंग्रेज अपने साम्राज्य विस्तार के साथ–साथ अपने धर्म (ईसाई) और संस्कृति का भी विस्तार कर रहे थे–

''रंगती जाती लाल हमारी भारतमाता की चुनरी !
सर्वनाश सरिता–कगार पर भोली जनता आज खड़ी !
पश्चिम की है नयी सभ्यता अपनी संस्कृति पर हावी !
आज पराजित गंगा–यमुना तो कल फिर सतलज–रावी ! [22]

राष्ट्र रक्षा के लिए महाराणा प्रताप ने अपने रोम–रोम का भी बलिदान कर दिया हैं। अपनी मातृभूमि की रक्षा पर महाराणा प्रताप के विचार इस प्रकार व्यक्त हुए हैं–

कैसी ओज भरी है देह,
कैसा आँगन कैसा गेह।
कितना मातृ–चरण पर नेह,
उसको छू न गया संदेह।।
कैसी है मेवाड़ी–आन;
कैसी है राजपूती शान।
जिस पर इतना है कुर्बान,
जिस पर रोम–रोम बलिदान।। [23]

अंग्रेज भारत में जहाँ कहीं भी देशभक्तों पर विजय प्राप्त नहीं कर सका, वहाँ मैत्री के लिए हाथ बढ़ाया और फिर छल से पराजित किया। कुँअर सिंह को भी ऐसा प्रस्ताव आया परन्तु बासुरीया बाबा ने अपनी जनता के दुःख से इस प्रकार परिचित कराया। उद्धृत है ये पंक्तियाँ–

''सच तो यह है, गोरे मुझसे मैत्री का दम भरते हैं।
किन्तु मुझे लगता है ऐसा वे मन ही मन डरते हैं।
फिर भी मैं हूँ शान्ति उपासक झंझट नहीं सुहाती है।
जीवन में सुख–शान्तिपूर्ण समता ही मुझकों भाती है।
कहा बँसुरिया बाबा ने हँस–कुँअर सिंह सच कहते हो ?
इसी शान्ति की खातिर, क्या अपमान जुल्म सब सहते हो ?
देश विधर्मी के जूतों के नीचे विदलिन होता है !
इसी शान्ति के लिए कहो क्यों बच्चा–बच्चा रोता है !
तब तो जीवन में श्मशान ही अच्छा है सुनसान कहीं !
जहाँ न कोई भी हलचल है, कोलाहल का स्थान नहीं !'' [24]

अपनी देशभक्ति, राष्ट्रभक्ति का परिचय महाराणा प्रताप ने दिया है जब भी कभी वह प्रजा के दुःख से परिचित होता था, तब युद्ध करने के लिए तैयार होकर अपनी सेना को आदेश देता। श्यामनारायण पाण्डेय की ये पंक्तियाँ द्रष्टव्य है–

इधर देखकर अत्याचार,
सुनकर जन की करुण पुकार।
रोक शत्रु के भीषण–वार,
चेतक पर ही सिंह सवार।।
कह उठता था बारंबार,
हाथों में लेकर तलवार–
वीरों हो जाओ तैयार
करना है माँ का उद्धार।। [25]

अंग्रेज फिरंगी, स्त्रियों पर अत्याचार करता, तब उसके अत्याचार से भयभीत स्त्री की व्यथा सुनकर कुँअर सिंह ने अपने विचारों को व्यक्त किया।

निष्कर्षः

हल्दीघाटी वीरकाव्य श्यामनारायण पाण्डेय रचित है। इसमें उन्होंने 17 सर्गो में मेवाड़ के महराणा की वीरता के बारे में लिख कर हिंदी साहित्य को समृद्ध किया है। काव्य में महराणा प्रताप, शक्ति सिंह, चेतक आदि के चरित्र का चित्रण बड़ी ही ओजपूर्ण भाषा में किया है। वहीं अकबर, जयसिंह आदि के दोहरे चरित्र को भी उजागर किया गया।

वीरवर कुँअर सिंह श्री आरसी प्रसाद सिंह द्वारा बिहार के बाबू कुँअर सिंह की वीरता के वारे में अपनी ढलती अवस्था में लिखा गया है। इसमें जगदीशपुर के राजा के देश प्रेम और अस्सी वर्ष की अवस्था में घोड़े पर सवार होकर तलवार भाँजते हुए बिहार, उत्तर–प्रदेश, मध्यप्रदेश, तक अंग्रेजों के दाँत खट्टे करने वाले तथा कभी भी अंग्रेजों के जैसे विश्वविजयी के हाथ न आने वाले वीर शिरोमणि की उत्तेजक गाथा को लिपि बद्ध किया है। कवि ने बड़ी ही बुद्धिमत्ता पूर्वक समाज के हर बच्चों, महिलाओं, पुरुषों के वीरत्व का वर्णन कर पुस्तक को बहुउपयोगी बना दिया है। शोध–प्रबंध पढने से नसें फड़क उठेगी, और शरीर मे वीरता का संचार होगा, पढने से उसका दृश्य स्पष्ट होगा तथा मातृभूमि के प्रति भक्ति भावना जाग्रत होगी।

संदर्भ–सूचीः

1. हल्दीघाटी–श्री श्यामनारायण पाण्डेय, प्रकाशक–इंडियन प्रेस प्रा.लि., इलाहाबाद, 2011, पृ.11
2. वीरवर कुँअर सिंह–आरसी प्रसाद सिंह, प्रकाशक–तारामण्डल, प्रथम संस्करण–1989, पृ. 'ज'
3. हल्दीघाटी–श्री श्यामनारायण पाण्डेय, प्रकाशक–इंडियन प्रेस प्रा.लि., इलाहाबाद, 2011, पृ. 15
4. वीरवर कुँअर सिंह–आरसी प्रसाद सिंह, प्रकाशक–तारामण्डल, प्रथम संस्करण–1989, पृ. 'ज'
5. हल्दीघाटी–श्री श्यामनारायण पाण्डेय, प्रकाशक–इंडियन प्रेस प्रा.लि., इलाहाबाद, 2011, पृ. 20–21
6. वीरवर कुँअर सिंह–आरसी प्रसाद सिंह, प्रकाशक–तारामण्डल, प्रथम संस्करण–1989, पृ. 'प'
7. हल्दीघाटी–श्री श्यामनारायण पाण्डेय, प्रकाशक–इंडियन प्रेस प्रा.लि., इलाहाबाद, 2011, पृ. 15
8. वीरवर कुँअर सिंह–आरसी प्रसाद सिंह, प्रकाशक–तारामण्डल, प्रथम संस्करण–1989, पृ. 4
9. हल्दीघाटी–श्री श्यामनारायण पाण्डेय, प्रकाशक–इंडियन प्रेस प्रा.लि., इलाहाबाद, 2011, पृ. 19
10. वीरवर कुँअर सिंह–आरसी प्रसाद सिंह, प्रकाशक–तारामण्डल, प्रथम संस्करण–1989, पृ. 7
11. हल्दीघाटी–श्री श्यामनारायण पाण्डेय, प्रकाशक–इंडियन प्रेस प्रा.लि., इलाहाबाद, 2011, पृ. 21
12. वीरवर कुँअर सिंह–आरसी प्रसाद सिंह, प्रकाशक–तारामण्डल, प्रथम संस्करण–1989, पृ. 7
13. हल्दीघाटी–श्री श्यामनारायण पाण्डेय, प्रकाशक–इंडियन प्रेस प्रा.लि., इलाहाबाद, 2011, पृ. 32
14. वीरवर कुँअर सिंह–आरसी प्रसाद सिंह, प्रकाशक–तारामण्डल, प्रथम संस्करण–1989, पृ. 8
15. हल्दीघाटी–श्री श्यामनारायण पाण्डेय, प्रकाशक–इंडियन प्रेस प्रा.लि., इलाहाबाद, 2011, पृ. 35
16. वीरवर कुँअर सिंह–आरसी प्रसाद सिंह, प्रकाशक–तारामण्डल, प्रथम संस्करण–1989, पृ. 13
17. हल्दीघाटी–श्री श्यामनारायण पाण्डेय, प्रकाशक–इंडियन प्रेस प्रा.लि., इलाहाबाद, 2011, पृ. 37
18. वीरवर कुँअर सिंह–आरसी प्रसाद सिंह, प्रकाशक–तारामण्डल, प्रथम संस्करण–1989, पृ. 29
19. हल्दीघाटी–श्री श्यामनारायण पाण्डेय, प्रकाशक–इंडियन प्रेस प्रा.लि., इलाहाबाद, 2011, पृ. 38
20. वीरवर कुँअर सिंह–आरसी प्रसाद सिंह, प्रकाशक–तारामण्डल, प्रथम संस्करण–1989, पृ. 37
21. हल्दीघाटी–श्री श्यामनारायण पाण्डेय, प्रकाशक–इंडियन प्रेस प्रा.लि., इलाहाबाद, 2011, पृ. 47
22. वीरवर कुँअर सिंह–आरसी प्रसाद सिंह, प्रकाशक–तारामण्डल, प्रथम संस्करण–1989, पृ. 38
23. हल्दीघाटी–श्री श्यामनारायण पाण्डेय, प्रकाशक–इंडियन प्रेस प्रा.लि., इलाहाबाद, 2011, पृ. 53
24. वीरवर कुँअर सिंह–आरसी प्रसाद सिंह, प्रकाशक–तारामण्डल, प्रथम संस्करण–1989, पृ. 39
25. हल्दीघाटी–श्री श्यामनारायण पाण्डेय, प्रकाशक–इंडियन प्रेस प्रा.लि., इलाहाबाद, 2011, पृ. 54